जीवन में सफलता, संतान प्राप्ति, सुख शान्ति के लिये करें श्राद्ध

जीवित माता–पिता और गुरुजनों की सेवा करना तो मानव कर्त्तव्य है, परन्तु उनके मर जाने पर शरीर की दाह–संस्कार आदि क्रियाओं द्वारा जब मिट्टी में मिट्टी मिल जाती है, और आत्मा शरीर के बिना खाने–पीने की योग्यता नहीं रखती अतः पुनः कर्मानुसार गर्भ में चला जाता है। लेकिन बड़े ही अफसोस की बात है कि मृत व्यक्ति के पीछे किये जाने वाले कर्म को आधुनिक व्यक्ति ढ़ोंग बताते हैं। वे कुतर्क करते हैं कि मृत व्यक्ति के नाम पर ब्राह्मणों ने खाने–पीने का ढ़ोंग बना रखा है। क्या ब्राह्मणों का पेट लेटर बॉक्स है कि उसमें कुछ डाला और मृत व्यक्ति को मिल गया। ब्राह्मण क्या परलोक के पोस्टमेन हैं? ऐसे–ऐसे अनेक कुतर्क सामने आते रहते हैं।

यह कितने खेद और आश्चर्य की बात है कि वेद में जो विषय लबालब भरा पड़ा हो, उपलब्ध संहिताओं में भी चार हजार मन्त्र जिस विषय का प्रत्यक्ष प्रतिपादन करते हों– ऐसे सुस्पष्ट विषय का भी नास्तिकों के उच्छिष्ट कुतर्कों द्वारा खण्डन करते हुए नहीं लजाता– ''किमाश्चर्यमतः परम्''? हमारे धर्मशास्त्रों में श्राद्ध के सम्बन्ध में इतने विस्तार से विचार किया गया है कि इसके सामने अन्य समस्त धार्मिक कार्य गौण (बहुत कम महत्व के) लगते हैं। श्राद्ध के छोटे से छोटे कार्य के सम्बन्ध में इतनी सूक्ष्म मीमांसा और समीक्षा की है कि विचारशील व्यक्ति चमत्कृत हो उठते हैं। मनोविज्ञान के अध्येताओं के लिए श्राद्धीय विवेचन एवं अध्ययन की सामग्री है। शास्त्रकारों ने अपने पांडित्य और मनोविज्ञान का यत्परोनास्ति–रूप प्रदर्शित किया है। नया मकान बनवाने पर, समृद्धि प्राप्त होने पर, देश में कोई नयी असाधारण घटना होने पर, शत्रुओं पर विजय प्राप्त होने पर, पुत्र जन्म, यज्ञोपवीत, विवाह, कन्या–दान आदि के अवसरों पर जब परिवार में सभी लोग मिलकर उत्सव मना रहे हों, सबका मन उल्लासित हो, उस समय अपने स्वर्गीय बन्धुओं की स्मृति आना नितांत स्वाभाविक है। यह इच्छा भी उस समय अवश्य जागृत होती है कि यदि इस अवसर पर माता रहती, पिता रहते बड़े भाई रहते, दूसरे आत्मीय रहते तो उनको कितना आनन्द प्राप्त होता। जो हमारे सुख में अपनी अन्तःआत्मा से सुखी होते थे, दुःख में दुःखी होते थे, उनकी स्मृति मिटाये नहीं मिट सकती। अतः यह इच्छा स्वाभाविक है कि वह अज्ञात लोक के वासी भी हमारे उल्लास में, आनन्दोत्सव में सम्मिलित हों, शरीर से न सही, आत्मा से हमारे साथ रहें, अतः उनके प्रति श्रद्धानत होना और श्रद्धा निवेदित करना स्वाभाविक हो जाता है। उनका शास्त्रीय मंत्रों द्वारा मानसिक आह्वान पूजन ही श्राद्ध है।

इस मनोवैज्ञानिक सत्य से इन्कार नहीं किया जा सकता कि मन की भावना बड़ी प्रबल होती है। श्रद्धाभिभूत मन के सामने स्वर्गीय आत्मा सजीव और साकार हो उठती है। श्राद्ध में माता–पिता आदि के रुप का ध्यान करना आवश्यक कर्त्तव्य के रूप में निर्धारित किया गया है। अनेक श्रद्धालु लोगों का यह अनुभव है कि श्राद्ध के समय माता–पिता या किसी अन्य स्नेही की झलक दिखायी दी। भगवान् राम ने जब अपने पिता का श्राद्ध किया तो पिण्ड–दान के बाद भगवती सीता को दशरथ आदि पित्तरों का दर्शन कराया था। यह निरी कपोल–कल्पना नहीं है। आज का मनोविज्ञान भी श्राद्ध के इस सत्य के निकट पहुँचता जा रहा है।

इस बार श्राद्ध पक्ष संवत् 2075 भाद्रपद शुक्ल चतुदर्शी दिनाँक 24 सितम्बर 18, सोमवार से आरम्भ होगा एवं आश्विन कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी दिनाँक 8 अक्टूबर 2018, सोमवार को समाप्त होगा।

श्राद्ध क्या है ?

''श्राद्ध प्रकाश'' में बृहस्पति वचन से बताते हैं– ''संस्कृत व्यन्जनाद्यं च पयोदधिधृतान्वितम्' श्रद्धया दीयते यस्मात् श्राद्धं तेन प्रकीर्तितम्''

पकाये हुए शुद्ध पकवान व दूध, दही, घी, आदि को श्रद्धा पूर्वक पितरों के नाम दान करने का नाम श्राद्ध है। 'देश काल, पात्र, के अनुसार तिल, कुश, जल के साथ दिया हुआ दान ही श्राद्ध है।

इससे सिद्ध है कि शास्त्र विधि विधान से पित्तरों के निमित्त उन्हें तृप्त करने हेतु दिया हुआ दान ही श्राद्ध है।

क्या श्राद्ध पितरों को मिलता है ?

जब हम अपना जन्मदिन मनाते हैं तो हम प्रसन्न होते हैं। उसी तरह मृत प्राणी को उनके मरण तिथि के दिन मृतात्मा के निमित्त श्राद्ध करने से तृप्ति मिलती है।

क्या जन्म के बाद भी श्राद्ध मिलता है ?–

गीता में श्री कृष्ण ने कहा है– ''जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः ध्रुवं जन्म मृतस्य च'' जन्म लेने वाले की मृत्यु निश्चित है, और मरने वाले का जन्म निश्चित है। यह बात सत्य है पर इसमें अवधि का निर्देश नहीं है।

अतः मृत प्राणी की आत्मा अगर अतृप्त हो तो भूत, प्रेत, पशु आदि योनि ग्रहण करती है। अगर सुकर्मा है तो पितृ रूप में प्रकट होते है। अगर उभयकर्मा है तो मनुष्य, सर्प, कीट आदि योनियों में आत्माएँ जन्म लेती है।

हमारा यह शरीर पंच भौतिक है, मरने के बाद वायु रूप सूक्ष्म शरीर बनता है पर 14 मूल प्रवृत्तियां ज्यों की त्यों बनी रहती है।

शास्त्र कहते हैं कि मरने के बाद भी प्राणी के निमित्त किया कर्म इस मृत्युलोक में शास्त्र विधि से करे तो उसे जैसी भी योनि में हो प्राप्त होता है।

अगर हमारे पिता, पितामह आदि देव लोक में है तो अमृत रूप से और किसी अन्य योनि को कर्मानुसार चले गये हैं तो वह श्राद्धान्न उसी योनि में खाने योग्य वस्तु रूप में परिणत होकर उन्हें मिलेगा। जैसे यहां से

किया गया मनीआर्डर प्रत्येक देश में वहाँ के रूपयों में परिवर्तित होकर मिलता है।

जब भगवान् राम ने किया श्राद्ध–

भगवान राम ने एक बार वन में महाराजा दशरथ का श्राद्ध किया। सीता जी ने अपने हाथों सब सामग्री तैयार की परन्तु जब निमन्त्रित ब्राह्मण भोजनार्थ पधारे तो सीता उनको देखकर कुटिया में जा छुपी।

भोजन के बाद जब ब्राह्मण चले गये तो सर्वज्ञ भगवान् राम ने सीता से इसका कारण पूछा। उत्तर में सीता जी कहने लगी–

पिता तव मया दृष्टो ब्राह्मणंगेषु राघव। दृष्टवा त्रपान्विता चाहमपक्रान्ता तवान्तिकात्।।

याऽहं राज्ञा पुरा दृष्टा सर्वालंकारभूषिता। सा स्वेदमलदिग्धांगी कथं पश्यामि भूमिपम्।।

अर्थात्– हे राघव! मैंने निमन्त्रित ब्राह्मणों के शरीर में आपके पिताजी का दर्शन किया। इसलिये लज्जित होकर मैं आपके निकट से दूर छुप गई। जिन मेरे श्वशुर ने पहिले मुझको सब आभूषणों और अलंकारों से सुसज्जित देखा था, अब वे पसीने और मैल से सनी हुई को कैसे देख पाते।

''ब्रह्माण्ड पुराण'' में भी यह प्रसंग विद्यमान है। वहाँ सीता ने इतना और अधिक कहा है कि वनयात्रा के समय जब मैं अलंकार उतार रही थी, तो मुझको देखकर पिताजी ने दुःख से लंबी सांस भरी थी और मूर्छित होकर गिर पड़े थे। सम्भवतः यह मूर्छा ही अन्त में उनकी मृत्यु का कारण बनी। मुझे यह ध्यान आ गया कि यदि अब वे मुझे इस दशा में देखेंगे तो मारे दुःख के कहीं वापस ही न लौट जाएँ। अतः में कुटिया में जा छुपी।

हम हमारे वंशजो का श्राद्ध करते रहते हैं उसी दिन हमें अकस्मात् मिष्ठान्न, वस्त्र व धन प्राप्त होता है इसमें सन्देह नहीं।

अतः हर व्यक्ति को अपने पित्तरों की प्रसन्नता हेतु शास्त्र के द्वारा बताई गई विधि से श्राद्ध करना चाहिए।

पित्तरों के प्रसन्न होने से ही कार्य सिद्धि–

शास्त्र कहते हैं कि ''पितरं प्रीतिमापन्ने प्रीयन्ते सर्वदेवता।'' पितरों के प्रसन्न रहने से ही सारे देवता प्रसन्न होते हैं। तभी मनुष्य के जप, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र साधना, आदि सफल होते हैं। अन्यथा उन्हें लाभ नहीं मिलता।

पित्तरों की प्रसन्नता से लाभ–

आयुः प्रजां धनं विद्यां, स्वर्गम् मोक्षं सुखानिच
प्रयच्छन्ति तथा राज्यं पितरः श्राद्ध तर्पिताः।।

(यम स्मृति व श्राद्ध प्रकाश)

श्राद्ध से तर्पित हुए पितर हमें, आयु, सन्तान, धन, विद्या, स्वर्ग, मोक्ष, सुख तथा राज्य भी देते हैं।

इसलिए ही तो शास्त्रकार, चाहे वैदिक कर्म हो या पुराणोक्त चाहे जो कर्म हो उसके पहिले वचनांग नान्दीश्राद्ध कर्म करने की आज्ञा देते हैं।

श्राद्ध के प्रकार–

भविष्य पुराण के अनुसार श्राद्ध 12 प्रकार के होते हैं। 1 नित्य 2 नैमित्तिक 3 काम्य 4 वृद्धि 5 सपिण्डन 6 पार्वण 7 गोष्ठी 8 शुद्धर्थ 9 कर्मांग 10 दैविक 11 यात्रार्थ 12 पुष्टयर्थ श्राद्ध होता है। इन श्राद्धों के प्रकारों में से समय–समय पर श्राद्ध किये जाते हैं।

श्राद्ध के अंग–

मुख्यतः श्राद्ध में 4 कर्म होते हैं–

1. तर्पण– इसमें दूध, तिल, कुशा, पुष्प, गंध मिश्रित जल पितरों को तृप्त करने हेतु दिया जाता है। ''श्राद्ध पक्ष में इसे नित्य करने का विधान है।
2. भोजन व पिण्डदान– पितरों के निमित्त ब्राह्मणों को पकवान भोजन दिया जाता है। श्राद्ध सारते समय चावल या जौ के पिण्डदान भी किये जाते हैं।
3. वस्त्रदान– वस्त्र दान देना श्राद्ध का मुख्य लक्ष्य भी है।
4. दक्षिणादान– यज्ञ की पत्नि दक्षिणा है जब तक भोजन कराकर वस्त्र और दक्षिणा नहीं दी जाती फल ही नहीं होता।

ज्योतिषीय दृष्टि से पितृदोष–

1. जन्म कुण्डली में निम्न योग हो तो पितृशाप के कारण सन्तान नहीं होती है।
2. पंचमेश सूर्य हो, त्रिकोण में हो और पाप मध्यत्व में हो।
3. पंचम भाव में तुला का सूर्य हो। व शनि के नवांश में पंचमेश हो पांचवाँ भाव पाप–मध्यत्व में हो।
4. पांचवे स्वगृही सूर्य एवं गुरू हो उस पर पाप दृष्टियां हो
5. आंठवे सूर्य पांचवे शनि तथा पंचमेश राहू के साथ हो।
6. व्ययेश लग्न में, अष्टमेश पांचवे व दशमेश पंचम हो।
7. पंचमेश चन्द्र नीच का हो, पाप मध्यत्व में हो तथा चतुर्थ और पंचम पाप ग्रह हो। मातृशाप से सन्तान बाधा।
8. पंचमेश चन्द्र राहू व शनि मंगल के साथ हो।
9. चतुर्थेश मंगल हो वह राहू व शनि के साथ हो।
10. लग्न में सूर्य एवं चन्द्र हो चतुर्थेश आंठवें हो पंचमेश एवं लग्नेश छठवें हो दशमेश या षष्ठेश लग्न में हो।
11. राहू सूर्य मंगल एवं शनि यथाक्रम एक, पांच, छः व आठवें भाव में हो और लग्नेश त्रिक में हो।
12. राहू, मंगल, गुरू तीनों त्रिक् (6/8) में हो। पंचम भाव में चन्द्र हो।

पितृ दोष से होने वाले अभाव–

1. सन्तान न होना।
2. वंश न चलना
3. धन की निरन्तर हानि होना
4. घर में झगड़ा रहना
5. मानसिक अशान्ति बनी रहना
6. भूत–प्रेत बाधा का न हटना
7. दरिद्रता घर में बनी रहना
8. मुकदमे में उलझे रहना
9. निरन्तर घर में किसी का बीमार रहना
10. कन्या का विवाह न होना

उपरोक्त में से एक न एक बाधा पितृ दोष के कारण बनी ही रहती है। अतः श्राद्ध द्वारा पितृदोष को शान्त करना चाहिए।

पितृदोष शान्त करने के उपाय–

1. तृपिण्डी श्राद्ध एवं तर्पण कराना
2. पूर्वजों के मृत्यु तिथि पर श्राद्ध करना
3. पीपल या बड़ या खेजड़ी को सींचना (पानी देना)
4. यथाविधि 'नारायणबली' करवाना
5. श्राद्ध पक्ष में 15 दिनों तक या पूर्वज की मृत्यु तिथि पर तर्पण करना
6. हर अमावस्या को तर्पण करना व ब्राह्मण भोजन कराना
7. अमावस व पूर्णिमा को मन्दिर आदि स्थानों पर कच्ची भोजन सामग्री दान देना।
8. प्याऊ खुलवाना, व सदाव्रत या अन्न क्षेत्र खोलना।

इस तरह यदि किसी के पितृ दोष हो या किसी को अपने पितृदोष से मुक्ति पाना हो तो उसे चाहिए कि वह 'श्राद्ध' से इस श्राद्ध पक्ष में अपने पितरों का तर्पण व श्राद्ध कर मुक्ति को प्राप्त करें।

श्राद्ध द्वारा यातनाओं से मुक्ति–

श्राद्ध में मुख्य बात ''श्रद्धा'' की है। श्रद्धा से श्राद्ध करने पर

पितृगण तृप्त हो जाते हैं। वस्तु बहुमूल्य है या अपमूल्य, इसकी अपेक्षा पितृगण नहीं करते। भगवान श्रीमद्भगवद्गीता में कहते हैं–

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो में भक्त्या प्रगच्छति। तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः।।

यदि कोई प्रेम, भक्ति सहित मुझे पत्र पुष्प, फल या जल प्रदान करता है, तो मैं उसे स्वीकार करता हूँ।

आयुः पुत्रान्यशः स्वर्ग कीर्तिपुष्टि बलंश्रियम्। पशूनसौख्यम् धनं धान्यं प्राप्तुयात्पित् पूजनात्।।

पित्तरों की पूजा करने से आयु पुत्र, यश, स्वर्ग, कीर्ति, पुष्टिबल, लक्ष्मी, पशु, धान्य प्राप्त होते हैं। मृत व्यक्तियों का श्राद्ध, तर्पण नहीं करवाने से उनसे पितृगण सदैव असंतुष्ट रहते हैं और पुत्रादि को कोसते हैं।

28 अंश रेतस् (सोम) को पितृऋण कहते हैं। 28 अंश रेतस् के रुप में श्रद्धा नामक मार्ग से भेजे जाने वाले पिण्ड तथा जल आदि के दान को श्राद्ध कहते हैं। इस श्रद्धा नाम मार्ग का संबंध मध्याह्न काल में पृथ्वी से होता है। इसलिए मध्याह्न काल में श्राद्ध करने का विधान है।

श्राद्ध किसी दूसरे के घर में, दूसरे की भूमि में कभी न किया जाये। जिस भूमि पर किसी का स्वामित्व न हो, सार्वजनिक हो, ऐसी भूमि पर श्राद्ध किया जा सकता है। शास्त्रीय निर्देश है कि दूसरे के घर में जो श्राद्ध किया जाता है, उसमें श्राद्ध करने वाले के पित्तरों को कुछ नहीं मिलता। गृह–स्वामी के पित्तर बलपूर्वक सब छीन लेते हैं।

''परकीय गृेहे यस्तु स्वात्पित् स्तर्प ये द्यदि। तद्भूमि स्वामिनस्तस्थ हरन्ति पित्तरो बलात्।।''

दूसरे के प्रदेश में यदि श्राद्ध किया जाय तो उस प्रदेश के स्वामी के पित्तर श्राद्ध कर्म का विनाश कर देते हैं।

''परकीय प्रदेशेषु पितृणां निवषयेत्तुयः तद्भूमि स्वामि पितृभिः श्राद्ध कर्म विहन्यते।।''

तीर्थ में किये गये श्राद्ध से भी आठ गुना पुण्यप्रद श्राद्ध अपने घर में करने से होता है–

''तीर्थदृष्टगुणं पुण्यं स्वगृहे ददतः शुभे।''

यही एक ऐसा अवसर है जब पितृलोक के स्वामी अर्यमा देव सभी प्राणियों को अपने–अपने स्थान पर श्राद्ध का अवसर प्रदान करते हैं। अश्विन कृष्ण पक्ष जब सूर्य कन्या संक्रान्ति पर हो तब पित्तरों के निमित्त किया गया श्रद्धा पूर्वक दान, तर्पण, भोजन आदि उन्हें मिलता है वह अक्षय हो जाता है। इन 15 तिथियों में प्रत्येक तिथि को उनके पितर प्रातः सूर्योदय से सूर्यास्त तक अपने पुत्र–पौत्रों के प्रति आशान्वित होकर द्वार पर आ जाते हैं और उनसे श्रद्धापूर्वक दिये दान की अपेक्षा रखते हैं।

सांय तक यदि उनके निमित्त कुछ भी न निकले तो निराश होकर श्राप देकर चले जाते हैं वापस दूसरे वर्ष की प्रतीक्षा करते हैं। अतः इस श्राद्ध पक्ष में पितृदोष मुक्ति के विशेष अवसर होते हैं।

अष्टलक्ष्मी कवच

जब लक्ष्मी को सम्पूर्णता से अपने जीवन में समाहित करने की बात आती है तो वहाँ स्वतः ही अष्ट लक्ष्मी का विचार आता है अष्ट लक्ष्मी के पूजन, उपासना व धारण करने से आठ प्रकार के ऐश्वर्य के मार्ग खुलने लगते है, क्या आप भी भोगना चाहते है आठों ऐश्वर्य..........

न्यौछावर राशि 4000/– रु.

मंगली कुण्डली दोष निवारण पैकेट

'मंगली दोष' यह नाम सुनते ही हर व्यक्ति चिंतित हो उठता है या जिनकी संतान विवाह योग्य हो चुकी है वे अधिक चिंतित हो जाते है। लेकिन क्या वास्तव में मंगल दोष जीवन को, विवाह को प्रभावित करता है। तो इसका उत्तर है हाँ! जब तक मंगल के बुरे प्रभावों को समझने का प्रयास किया जाता है, तब तक वह बुराई की हद से भी गुजर चुका होता है। यही कारण है कि वर-कन्या की जन्मकुंडली मिलाते समय मंगल की स्थिति भी देखी जाती है, क्योंकि कुंडली के कुछ भवों में मंगल उपस्थित होने पर वह मंगलीक दोष का कारण बन जाता है। जिनकी कुण्डली मंगली है और वे विवाह का प्रयास कर रहे है तो उन्हें आवश्यकता से अधिक प्रयास करने पड़ते है, विवाह तय हो जाने पर भी सगाई टूट जाती है। विवाह के दिन ही कई बार दुर्घटनाएँ होती देखी गई है। विवाह के पश्चात् जब एक मंगली हो और दूसरा जातक मंगली ना होने पर परस्पर वैमनस्यता देखी गई है। कटु संबंधों के कारण साथ रहना मुश्किल हो जाता है। कई ऐसी स्थितियाँ होती है लेकिन इसके साथ ही साथ दूसरे ग्रहों का संबंध, गोचर, दशा आदि भी जिम्मेदार बनती है। मंगली दोष होता ही नहीं यह कहना व्यर्थ ही होगा, जिसको पीड़ा होती है उसका दर्द दूसरा समझ पायेगा, कहना मुश्किल ही होता है। क्या इस मंगली दोष का कोई निवारण है, क्या इस समस्या से बचा जा सकता है, क्या मंगली दोष होने पर भी वर या कन्या का विवाह हो सकता है? यदि हां कहा जाये तो कोई मुश्किल बात नहीं क्योंकि जहाँ समस्या है वहाँ समाधान भी है और इसके लिये हम आपके लिए लाए हैं ''मंगली दोष निवारण पैकेट'' जो जीवन में इस दोष निवृति में सहायक बनेगा। रास्ता दिखाना हमारा दायित्व है, कर्म आपको करना है और फल भी आपको मिलेगा।

क्या मंगली कुण्डली के कारण- 1. विवाह में बाधा आ रही हैं? 2. विवाह होकर भी सुखमय जीवन नहीं हैं? 3. क्या आपके दाम्पत्य जीवन में कलह तो नहीं? 4. क्या आपके रिश्ते तलाक के कगार पर तो नहीं? 5. संबध हाँ होकर भी तय नहीं हो रहे है? 6. विवाह की उम्र लगभग पूर्ण होने पर भी विवाह सुख नहीं मिल पा रहा? 7. क्या आपकी जीवन साथी के साथ मधुरता नहीं है? 8. बात-बात पर क्रोधमय स्थिति हो जाती हैं? 9. क्या आप कष्टममय वैवाहिक जीवन से हताश है?

इस पैकेट में आप निम्न सामग्री पायेंगे– 1.मंगल पिरामिड 2.मंगल यंत्र 3.मंगल यंत्र लॉकेट 4.मंत्र जाप के लिये माला 5.मूंगा लॉकेट 6.पारद शिवलिंग 7.सम्पूर्ण विधि

न्यौछावर मात्र 3500 रुपये

आप सीधे ही बैंक एकाउन्ट में भी पैसा जमा करवा सकते हैं।

HDFC Bank A/c No. 014-225-6000-5331

(All Amount Payble at Jodhpur Account)

त्रिनेत्र सिद्धि केन्द्र

'त्रिनेत्र भवन' प्लोट नम्बर–1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक कॉलेज के मैन गेट के पास, जोधपुर (राज.)

फोनः 0291–2621625, 2615625, 2618625, 2440111, 2440999 टेलीफैक्सः 0291–2618625

E-mail: tantravtj@yahoo.com Visit us: fameandfortune.org